2

कुटीर

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने संदेश दिया है कि हमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या विपदा में अपने को संतुलित रखना चाहिए। किसी के धन को देखकर अपनी नीयत खराब नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने परिश्रम पर ही विश्वास करना चाहिए।

बुद्धन का कच्चा खपरैल का घर था। छोटी-छोटी दो कोठरियाँ, फिर उन्हीं के अनुरूप आँगन और उसके आगे पौर। पुराना छप्पर नीचे झुककर, घर के भीतर आश्रय लेने की बात सोच रहा था। जीर्ण-शीर्ण दीवारें रोशनदान न होने की साध दरारों के 'दत्तक' से पूरी किया करती थीं।

उस घर में और कुछ हो या न हो आँगन के बीच, चातक-पुत्र के विश्राम करने योग्य नीम का एक वृक्ष था। तीसरी उड़ान की थकान मिटाने के लिए वह उसी पर उतरा।

नीचे वृक्ष की छाया में बुद्धन लेटा हुआ था। अवस्था उसकी पचास के ऊपर थी। फिर भी अभी कुछ दिन पहले तक उसके पैरों में जीवन-यात्रा की इतनी ही मंजिल तय करने योग्य शक्ति और मालूम होती थी।

एक दिन एकाएक पक्षाघात ने उसे अचल कर दिया। जीवन और मृत्यु ने आपस में सुलह करके मानो आधे-आधे शरीर का बँटवारा कर लिया। स्त्री पहले ही गत हो चुकी थी। घर में 15-16 वर्ष का एकमात्र पुत्र गोकुल ही अवशिष्ट था। उसी के सहारे उसके दिन पूरे हो रहे थे।

गोकुल एक जगह काम पर जाता था। काम करके प्रतिदिन संध्या समय तक लौट आता था। आज अभी तक नहीं आया था, इसलिए बुद्धन उसके लिए छटपटा रहा था। ऊपर आकाश में तारे छिटक आए थे। इधर-उधर चारों ओर सन्नाटा था और घर में अकेला बुद्धन। यद्यपि उसमें खाट के नीचे उतरने तक की शक्ति नहीं थी, तो भी उसका मन न जाने कहाँ-कहाँ चौकड़ी भर रहा था। गोकुल सवेरे थोड़े-से चने खाकर काम पर गया था। बुद्धन के लिए भी कुछ चने और पीने का पानी यथास्थान रख गया था।

आज खाने के लिए घर में और कुछ था ही नहीं। कह गया था, शाम को मज़ूरी के पैसों का आटा लाकर रोटी बनाऊँगा। परंतु आज वह अभी तक नहीं आया था। अनेक आशंकाओं से बुद्धन का मन चंचल था। जो समय आनंद की स्निग्ध शीतल छाया में, शीतकाल के दिन की तरह, मालूम भी नहीं होने पाता और निकल जाता है, वही दुख की दाहक ज्वाला में निदाघ के दीर्घ दिनों की भाँति अकाट्य हो उठता है। रात बहुत नहीं बीती थी, परंतु बुद्धन को मालूम हो रहा था कि बरसों का समय हो गया। बार-बार अपने कान खड़े करके रात के उस सन्नाटे में वह गोकुल के पद-शब्द सुनने का प्रयत्न कर रहा था।

बड़ी देर बाद उसकी प्रतीक्षा सफल हुई। किवाड़ खुलने की आवाज़ सुनकर वह चौंका। वास्तव में यह गोकुल ही था। उसने कहा–"कौन गोकुल? बेटा आज बड़ी देर लगाई।"

गोकुल धीरे से पिता की खाट के पास आकर रोने लगा।

बुद्धन ने घबराकर पूछा–"क्या हुआ, बेटा क्या हुआ?" "आज मज़ूरी नहीं मिली। अब कैसे चलेगा?"

"ऐं, मज़ूरी नहीं मिली। फिर इतनी देर क्यों हुई?" प्रकृतिस्थ होकर गोकुल ने उसे अपना हाल सुनाया। सवेरे घर से निकलते ही गोकुल को सामने खाली घड़ा मिला। देखकर उसके पैर ढीले पड़ गए। सोचा आज भगवान ही मालिक है। काम पर पहुँचकर उसने देखा–ओवरसियर साहब आज कुछ ज़्यादा खफ़ा हैं। इंज़ीनियर साहब काम देखने आए थे। जान पड़ता है, काम देखने की जगह वे ओवरसियर साहब को ही देख गए थे। अपमान का यह बोझ उन्होंने दिन-भर मज़दूरों पर अच्छी तरह उतारा। शाम को मज़दूरी देने के समय भी साफ़ इंकार कर दिया–"आज दाम नहीं दिए जाएँगे।" उस अदालत के फैसले की तरह जिसकी कहीं अपील नहीं हो सकती, ओवरसियर साहब का हुकुम मानकर मज़दूर अपने-अपने घर लौट गए।

गोकुल लौटा चला आ रहा था कि एक जगह उसे रास्ते में कुछ पड़ा हुआ दिखाई दिया। पास पहुँचने पर मालूम हुआ, रुपये-पैसे रखने का बटुआ है। उठाकर देखा तो काफ़ी वजनदार था। वह सोच में पड़ गया–इसे खोलकर देखना चाहिए या नहीं। न देखने का निश्चय ही उसे दृढ़ करना पड़ा। कौतूहल-निवृत्ति करने के लिए उसने उसे टटोला। टटोलने पर मालूम हुआ रुपए हैं और बहुत कम भी नहीं। थोड़ी देर तक वहीं खड़ा-खड़ा सोचता रहा। इसका क्या करूँ? उसके पिता ने उसे अब तक जो कुछ सिखाया था, उसने उसे इस बात को सोचने का अवसर ही नहीं दिया कि बटुआ अपने पास रख ले। वह यही सोच रहा था कि वह बटुआ किसका है? जब उसे मालूम होगा कि उसका बटुआ खो गया है, तब उसकी क्या दशा होगी। रुपये-पैसे का क्या मूल्य है, यह बात वह कुछ दिनों में ही अच्छी तरह जान गया था। उस व्यक्ति की उस समय की दशा का विचार करके वह इस प्रकार सिहर उठा, मानो उसी का बटुआ खो गया हो।

उसे ध्यान आया कि कुछ दूर उसने एक गाड़ी जाती हुई देखी थी। उस पर कान में मोती-पिरोई सोने की बाली पहने हुए महतो बैठे थे। संभव है यह बटुआ उन्हीं का हो और किसी के पास इतने रुपये होना आसान भी नहीं है। यहाँ कुएँ पर गाड़ी रोककर उन्होंने पानी पीया होगा और आग जलाकर तंबाकू भरी होगी। एक जगह आग जलाई जाने के चिह्न मौज़ूद थे। उसने इस बात का विचार ही नहीं किया कि गाड़ी तक जाने में कितना समय लगेगा और वह दौड़ पड़ा। लगभग आधे घंटे के परिश्रम से वह उस गाड़ी के पास पहुँच गया। गोकुल ने हाँफ़ते-हाँफ़ते पूछा–"महतो, तुम्हारा कुछ खो तो नहीं गया?"

महतो ने चौंककर गाड़ी में इधर-उधर देखा। साथ ही जेब पर हाथ रखा तो पाषाण की तरह निष्पंद हो गया। गोकुल से महतो की वह अवस्था देखी न गई। बटुआ दिखाकर उसने झट से प्रश्न कर दिया–"यह तुम्हारा है?"

एक क्षण में ही जीवन और मृत्यु का द्वंद्व-सा हो गया। मानो बिजली के खटके ने प्रकाश बुझाकर फिर से अद्वीप्त कर दिया हो। महतो ने कहा–"भगवान तुझे सुखी रखे भैया! इसे कहाँ पाया?"

"रास्ते में पड़ा था। इसमें कितने रुपये हैं?"

महतो ने हिसाब लगाकर बताया– "बयालीस रुपये एक अठन्नी, एक घिसी हुई बेकाम दुअन्नी, दस या बारह आने पैसे, एक कागज़, एक चाँदी का छल्ला...."

गोकुल ने बटुआ खोलकर रुपये गिने। सब ठीक निकले। बटुआ हाथ में लेकर महतो की आँखों में आँसू भर आए। बोले–"इतनी बड़ी रकम पाकर भी जिसे उसका लोभ न हो, भैया मैंने ऐसा आदमी आज तक नहीं देखा। यदि किसी और को यह बटुआ मिलता, तो मेरा मरण हो जाता। मेरा रोम-रोम असीस दे रहा है, भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे.....!" यह कहकर महतो ने बटुए से निकालकर गोकुल को दो रुपए देने चाहे। उसने सिर हिलाकर कहा–"मेरे बप्पा ने किसी से भी भीख लेने के लिए मुझे मना कर दिया है। मुफ़्त के रुपये मैं न लूँगा।" महतो के सजल नेत्र विस्मय से खुले ही रह गए। गोकुल थोड़ी ही देर में उस अंधकार में उनकी आँखों से ओझल हो गया।

सब वृत्तांत सुनकर गोकुल अपराधी की भाँति खड़ा-खड़ा बोला–"बप्पा, आज खाने के लिए कुछ नहीं है। महतो से कुछ उधार माँग लाता, तो सब ठीक हो जाता। मेरी समझ में यह बात उस समय आई ही नहीं।"

बुद्धन की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे। गोकुल को अपनी दोनों भुजाओं में भरकर उसे छाती से लगा लिया। आनंदातिरेक ने उसका कंठावरोध कर दिया। उसे मालूम हुआ कि उसके क्षुधित और निर्जीव शरीर में प्राणों का संचार हो गया है। उसे जिस तृप्ति का अनुभव होने लगा वह दो-एक दिन की तो बात ही क्या जीवन-भर की क्षुधा शांत कर सकती है। धन-संपत्ति, मान और बड़ाई सब उसे तुच्छ-से प्रतीत होने लगे। मानो एकाएक उसके सब दुख, रोग दूर हो गए हैं। अब वह बिना किसी चिंता के मृत्यु का आलिंगन इसी क्षण कर सकता है।

बड़ी देर में अपने को सँभालकर बुद्धन बोला–"अच्छा ही किया बेटा, जो तू महतो से रुपये उधार नहीं लाया। यह उधार माँगना भी एक तरह का भीख माँगना ही होता। भगवान ने तुझे ऐसी बुद्धि दी है, मैं तो यही देखकर निहाल हो गया। दो-एक दिन की भूख हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जिस तरह चातक अपने प्राण देकर भी मेघ के सिवा किसी दूसरे का जल लेने का व्रत नहीं तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेक न छोड़ना। मुझे मालूम हो गया, यह तू मुझसे भी अच्छी तरह जानता है। फिर भी कहता हूँ, सदा ऐसी ही मति रखना। चाहे जितनी बड़ी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।"

—सियारामशरण गुप्त

शिक्षा ईमानदारी हज़ार नियामत है।

शब्द-पोटली

जीर्ण-शीर्ण – बहुत पुराना और टूटा-फूटा। साध – मन की इच्छा। पक्षाघात – लकवे का रोग, जिसमें व्यक्ति के शरीर के अंग निष्क्रिय हो जाते हैं। अचल – स्थिर, जिसमें गति न हो। सुलह – समझौता। गत हो चुकी थी – मर चुकी थी। अवशिष्ट – बचा हुआ। स्निग्ध – प्रेमपूर्ण, आनंददायक। शीतकाल – जाड़ों के दिन। दाहक ज्वाला – जलाने वाली अग्नि। निदाघ – ग्रीष्म ऋतु। दीर्घ – बड़े। अकाट्य – जिसे काटा न जा सके, वह बात जिसके विरोध के लिए कोई तर्क न हो। पद-शब्द – पैरों की ध्वनि की आहट। प्रकृतिस्थ – स्वाभाविक रूप में आकर। गोकुल को सामने खाली घड़ा मिला – घर से निकलते समय यदि सामने खाली घड़ा देखने को मिल जाए तो इसे अपशकुन माना जाता है। लोक-मान्यता के अनुसार इस स्थिति में व्यक्ति जिस काम से जा रहा होता है, वह काम पूरा नहीं होता। कोतूहल-निवृत्ति – आश्चर्य को शांत करने के लिए। निष्पंद – धड़कनरहित। द्वंद्व – संघर्ष। उद्दीप्त – प्रकाशित हुआ, जला हुआ। मरण – मृत्यु। असीस – आशीर्वाद। सजल – आँसूयुक्त। विस्मय – आश्चर्ययुक्त। आनंदातिरेक – अत्यधिक आनंद। कंठावरोध – गले का रुँध जाना। क्षुधित – भूखे। निर्जीव – बेजान, प्राणरहित। तृप्ति – संतुष्टि। निहाल – धन्य।

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

(क) दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए:

1. बुद्धन का घर था–

   खपरैल का ☐ मिट्टी का ☐ फूँस का ☐ ईंटों का ☐

2. बुद्धन के घर में पेड़ था–

   आम का ☐ नीम का ☐ बरगद का ☐ पीपल का ☐

3. गोकुल घर आकर रोने लगा था क्योंकि उसे–

   काम नहीं मिला ☐ पीटा गया ☐ मज़ूरी नहीं मिली ☐ उपर्युक्त सभी ☐

4. घर लौटते समय गोकुल को रास्ते में मिला–

शेर ☐ हाथी ☐ थैला ☐ बटुआ ☐

5. वास्तव में बटुआ था–

महतो का ☐ गोकुल का ☐ बुद्धन का ☐ गाड़ीवान का ☐

6. बुद्धन ने कहा कि चाहे कितनी भी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत–

खराब कर लेना ☐ न डुलाना ☐ दोनों सही ☐ दोनों गलत ☐

(ख) नीचे दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

उधार, वृक्ष, आग, तारे, ख़फ़ा

1. नीचे _____ की छाया में बुद्धन लेटा हुआ था।
2. ऊपर आकाश में _____ छिटक रहे थे।
3. ओवरसियर साहब आज कुछ ज़्यादा _____ हैं।
4. एक जगह _____ जलाए जाने के चिह्न मौज़ूद थे।
5. वह _____ माँगना भी एक तरह का भीख माँगना ही होता।

(ग) सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य पर ✗ लगाइए:

1. बुद्धन बहुत अमीर आदमी था। ☐
2. बुद्धन को पक्षाघात ने अचल कर दिया था। ☐
3. गोकुल मज़ूरी किया करता था। ☐
4. ओवरसियर ने उस दिन किसी को मज़ूरी नहीं दी। ☐
5. गोकुल ने सेठ से पचास रुपए उधार ले लिए थे। ☐

(घ) निम्नलिखित को सुमेल कीजिए:

(अ)	(ब)
1. कच्चा घर	(a) महतो
2. बुद्धन	(b) शरीर
3. गोकुल	(c) खपरैल
4. बटुआ	(d) पक्षाघात
5. निर्जीव	(e) ईमानदार

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कहानी के आधार पर बुद्धन का परिचय दीजिए।
2. सवेरे घर से निकलते समय गोकुल के पैर ढीले क्यों पड़ गए?
3. रास्ते में गोकुल को मिले बटुए में कितने रुपये थे?
4. उस दिन गोकुल को मज़ूरी क्यों नहीं मिली?

5. भूखे बुद्धन को तृप्ति का अनुभव क्यों हुआ?
6. बुद्धन ने अपने बेटे को क्या शिक्षा दी?

(च) किसने किससे कहा?

1. "आज मज़ूरी नहीं मिली।" _____ ने _____ से
2. "फिर इतनी देर क्यों हुई?" _____ ने _____ से
3. "भगवान तुझे सुखी रखे भैया!" _____ ने _____ से
4. "इसमें कितने रुपये हैं?" _____ ने _____ से
5. "मुफ़्त के रुपए मैं नहीं लूँगा।" _____ ने _____ से

भाषा बोध

(छ) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग तथा प्रत्यय लिखिए:

	शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
1.	अचल	_____	_____
2.	अवशिष्ट	_____	_____
3.	शीतकाल	_____	_____
4.	प्रकृतिस्थ	_____	_____
5.	वज़नदार	_____	_____
6.	परिश्रम	_____	_____
7.	सजल	_____	_____
8.	ईमानदारी	_____	_____

संधि—ध्वनियों के पारस्परिक मेल से जो विकार होता है, वह संधि कहलाता है; जैसे—

सूर्य + उदय = अ + उ = ओ = सूर्योदय

संधि के प्रकार—संधि तीन प्रकार की होती है—

(क) स्वर संधि—स्वर में स्वर के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे—

विद्यालय = विद्या + आलय = आ + आ = आ

(ख) व्यंजन संधि—व्यंजन के साथ व्यंजन अथवा स्वर के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

जगदीश = जगत् + ईश

(ग) विसर्ग संधि—विसर्ग के साथ व्यंजन अथवा स्वर के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे—

अधोगति = अधः + गति

(ज) निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए:

पक्षाघात	–	____________	वृत्तांत	–	____________
आनंदातिरेक	–	____________	कंठावरोध	–	____________
निर्जीव	–	____________	यद्यपि	–	____________

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

खपरैल	पक्षाघात	स्निग्ध	सन्नाटा	निष्पंद
____________	____________	____________	____________	____________

क्रियात्मक कार्य

- कहानी में घटी निम्नलिखित घटनाओं को क्रमानुसार लिखिए:
  1. चाहे जितनी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।
  2. बुद्धन ने कहा—"कौन गोकुल? बेटा आज बड़ी देर हो गई।"
  3. महतो ने बटुए से निकालकर गोकुल को दो रुपए देने चाहे।
  4. ओवरसियर साहब आज कुछ ज़्यादा खफ़ा हैं।
  5. "बप्पा, आज खाने के लिए कुछ नहीं है।"

परियोजना कार्य

- जिस प्रकार लोक में मान्यता है कि घर से निकलते समय यदि खाली घड़ा या बाल्टी लेकर जाता हुआ कोई मिल जाए तो अशुभ होता है। इस प्रकार से लोक में प्रचलित किन्हीं दो मान्यताओं को पता करके लिखिए:

____

____

परिचर्चा

- कहावत है कि "ईमानदारी हज़ार नियामत है।" विषय पर आपस में चर्चा कीजिए।

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दीजिए:
  1. बरफ़ से बने घर कहाँ पाए जाते हैं? ____________
  2. गंदा पानी पीने से होने वाली कोई जानलेवा बीमारी। ____________
  3. 'गत हो जाना' किसे कहते हैं? ____________